

DATE

NOTES

जिन मंदिर शिक्षालय नहीं शिक्षालय हैं।

पात्र :- (i) विद्यार्थी,
(ii) व्यापारी,
(iii) युवा,

(iv) बेरोजगार,
(v) विश्रुतबोर,
(vi) नायक।

1. विद्यार्थी :-

O'MY GOD! Good morning

हे प्रभु! आनन्ददाता, ज्ञान हमको दीजिए।

मुझको कुछ आता नहीं, फिर भी पास कीजिए।

हे भगवान! देखो, आपको पता ही है

कि मैं किकेर का फैन हूँ और अभी भारत-

पाकिस्तान की श्रृंखला चल रही है, तो समझलो

कि भारत की इज्जत दांव पर लगी है। अतः

मैच देखना बहुत ही जरूरी है और आपको

तो पता ही है कि बॉर्ड की परीक्षा सिर पर

है। पढ़ाई तो हो नहीं पा रही है। पढ़ाई करूँ कि

मैच देखूँ। तो हे भगवान! सहन न लेना। मेरी

इज्जत आपके ही हाथों में है। मैं अपनी पॉकेट

मनी में से २५ रु. दानपात्र में जरूर डालूंगा।

याद रहे भगवान! श्रृंखला मत जाना।

Goodbye!

2. व्यापारी:— अति पुण्य उदप मम आया।
सौ-सौ की गड़ड़ी पाया।
चतुर्दि मंगलं, सोना मंगलं, चांदी मंगलं।
रूपया मंगलं, ड्राफ्ट मंगलं।

हे भगवान! आप नाराज क्यों हो
गये हैं। इस बार बिल्कुल भी सीजन नहीं
चल रहा है। अरे! आपको चॉवल चढ़ा सकूँ
इतनी भी कमाई नहीं हो पा रही है। अरे!
जब आप हमें खाना-खाने को नहीं मिलेगा तो
हम आपको क्या चढ़ावे? भगवान जरा दया करो।
आप दया निधान हैं। हमारी दुकान अच्छी चलने
लगी जावे और अपने मजे हो जावे। भगवान
अपनी यह बात पक्की रही कि अपने मजे तो
आपके मजे। रुक जोरदार विधान कराऊँगा। अब
तो अन्तीक्षा पार्श्वनाथ हम तुम्हारे ही भरोसे हैं।

3. रिश्वतखोर:—

हे भगवान! आप तो सर्वज्ञ
हैं। मैंने जो अर्जी लगाई है। आप तो समझ ही
गये होंगे। समझे न हो तो भगवान मैं फिर
से बता रहा हूँ कि मैं तो रिश्वतखोरी के
चक्कर में पकड़ा गया हूँ। लोगों ने कह दिया
है कि मैंने एक लाख रुपये की रिश्वत ली है मगर

राज की बात बताऊँ भगवान की तो दो लाख
की है। पर आप ही इस झंझट/मुसीबत से
छुड़ा सकते हो। अगर मैं कोई भी बाइज्जत
बरी हो गया तो 10% आपको दूँगा व 25% साथ
ही चढ़ाऊँगा भी।

4. बेरोजगार:—

इधर-उधर देवते हुये....
वाह-भगवान वाह! आपके मंदिर में फर्श मार्बल
का, दीवारों पर ऑयलपेंट, बेदी पर सोने का पेंट
छत चंबरादि चांदी के क्या कहना भगवान...
अपरिग्रही भगवान के पास इतना परिमल और
रुक्म मैं आपका भक्त बेरोजगार घूम रहा हूँ।
किसी से मत कहना भगवान ये इस भी मैंने
दूसरों की पहन रखी है। अरे भगवान! कुछ तो
सोचो हमारे बारे में, हम जैसे बेरोजगारों पर
कृपा करो। बस रुक छोटी-सी नौकरी दिना दो
भगवान! पहली वेतन आपको ही चढ़ाऊँगा।
ज्यादा क्या कहूँ भगवान और तो आप समझ
ही गये होंगे।

5. युवा:

तुमसे लागी लगन, ले लो अपनी शरणा।
पास प्यारा, तुम ले लो कृपा दो ब्याह हमारा।।
हे पारसनाथ भगवान! मैं कब ते

रविवार का व्रत कर रहा हूँ। पर आप ही कि सुनते ही नहीं हो। अरे! मैं एक शादी ही तो कर रहा हूँ। भगवान आपकी ही कृपा से चरुवर्तियों की तो 96-96 हजार शादियाँ हो गईं मेरी एक भी एक नहीं करवा सकते हैं अरे! हमें पता है आपकी शादी नहीं हुई तो क्या हुआ? भक्तों पर दया तो करनी चाहिये। हे चिन्तामणि पार्श्वनाथ! दया करो। किसी कन्या को मेरी ऊपर प्रसन्न करवा दो।

6. ब्रायक:— अभी आपने देखा कि कितने भक्त आये और वीतरागी भगवान से अपने-अपने राम की बातें कहकर चले गये। ये तो गँव-गँव, घर-घर की कहानी है। दर्शन करने आते हैं और कहलाते हैं। भगवान के नाम से और जैन से किराना भण्डार, वर्तन भण्डार, वस्त्र भण्डार लाते हैं। पर देवदर्शन की बिबि कथा है यद्यपि लोक दंग से नहीं जानते हैं।

कोई एक:— तो आप ही बता दो देवदर्शन की बिबि क्या है?

ब्रायक:— देवदर्शन की बिबि बतायेगा।

कोई एक:— स्वाध्याय करने से क्या लाभ है?

ब्रायक:— स्वाध्याय करने से हितहित, मह्यमह्य, पूज्यापूज्य का ज्ञान होता है। यह द्रव्य ब्रह्म तत्त्व का ज्ञान पूर्वक भेदज्ञान से सम्यग्दर्शन प्राप्त होता है।

सभी एक साथ:— भैया आपने तो हमारी आंखें खोल दी।

ब्रायक:— भैया आप सब लोग भी मांग लेकर भगवान के पास आते हैं लेकिन भगवान मन्ते हैं और न देते हैं। हम जैन हैं हमें जैन का सच्चा स्वरूप नहीं मालूम, जिनवाणी मिली, उत्तम कुल मिला फिर भी धर्म से वंचित हो रहे हैं। हमसे सभावा कौन है? आचार्य कोई नहीं।

यह मानुष पर्याय:-

जय जिनेन्द्र

DATE

मैद विज्ञान

पं. राज कुमार जी शास्त्री

NOTES

पात्र परिचय

धनिया - धोबी

अगम - शान्त प्रकृति का युवक

सनेश - पण्डित जी

दिव्यांश - किंचित उद्दंड प्रकृति वाला युवक

चित्मय - विद्वान् मित्र

(धोबी की दुकान - धनिया गुनगुना रहा है)

धनिया - धनिया धोबी मेरा नाम,

कपड़े धोना मेरा काम।

मैंल को भगाऊँ, दाग को मिटाऊँ, कपड़ों को चमकाऊँ
हो... हो... धनिया धोबी...

(प्रेस करते हुये) - ये सेंढ लोम बिबने

गंदे कपड़े कर लेते हैं। उन्हें धोते-धोते मेरे
पप्पू की अम्मा आधी बिस गई है।

दिव्यांश (आते हुए) - अरे भइया धनिया।

धनिया - कहिए भाई साहब क्या सेवा करूँ?

दिव्यांश - अरे भाई, मैं परसों एक चादर धोने को दे गया
था। वह तैयार कर दिया क्या?धनिया - अरे बिल्कुल तैयार है साब, रुक रुक
सकासक यह रही।

दिव्यांश - ठीक है लाओ इधर, पैसे बाद में पहुँचा दूँगा।

धनिया - कोई बात नहीं भाई साहब पैसे तो आते रहेंगे।
(दिव्यांश चादर लेकर एक तरफ सी जाता है)

DATE

NOTES

धनिया - (प्रेस कर रहा है एवं गुनगुना रहा है।)

धनिया धोबी मेरा नाम,

कपड़े धोना मेरा काम।

मैंल को भगाऊँ - - - (श्वेत्-जीत लेना)

(अगम को आता देखकर)

धनिया - जय जिनेन्द्र अगम भाई साहब। आप तो बहुत
दिनों बाद नजर आ रहे हैं कहीं बाहर गए थे क्या?अगम - हाँ भाई धनीराम! बाहर ही गया था और आज
फिर जयपुर जाना है। धनीराम मैं एक चादर जल्द
गया था, वह तैयार कर दिया।धनिया - भाई साहब, धनिया समय का पाबंद है। आपकी
चादर तो कल से तैयार है, यह लीजिए। (चादर
उठाकर देता है।)

अगम - (अच्छी तरह चादर देखते हुए।)

अरे धनीराम! यह चादर मेरा नहीं है। दूसरा
दिखाओ यह और निवी का होगा।धनिया - अरे बाप रे भूल हो गई, अभी-अभी दिव्यांश
भाई साहब एक चादर ले गए हैं उनका भी किंकुब
ऐसा ही था। कल मैं चादर बदल कर दे दूँगा।अगम - अरे नहीं भइया, मुझे तो अभी रात को जयपुर
जाना है। मुझे चादर बहुत जरूरी है।धनिया - तो भाई साहब आप ही जरा तकलीफ कर
उन्हें वहाँ से बदलते हुए चले जाना।

अगम - हाँ यह ठीक है।

1/1/11

दिव्यांस के घर जाकर)

अरे कोई है... दिव्यांस ओ दिव्यांस...
(कोई आवाज नहीं आती तो जंदर जाता है)

अच्छा तो भाई साहब चादर तानकर सो रहे हैं। दिव्यांस ओ दिव्यांस। (चादर खींचता है)

दिव्यांस - (गुस्से में, आंखें मलते हुए)

कौन बेवकूफ मेरी नींद खराब कर रहा है?

अगम - अरे भइया नाराज मत होओ, मैं तो अपनी चादर लेने आया हूँ।

दिव्यांस - दिमाग तो खराब नहीं हो गया। एक तो मेरी नींद खराब कर दी आकर, आ... क्या मजा आ रहा था। दूसरे कह रहे हो कि अपनी चादर लेने आया हूँ यह कोई कपड़े की या बोबी की दुकान है क्या?

अगम - वरे नहीं भइया, ये जो चादर तुमने ओढ़ी है, वो मेरी चादर मेरी है।

दिव्यांस - लो कर लो बात। अब साहब मेरी चादर को अपनी बताने लगे, हड़ हो गई, फिर कछा ये घर भी मेरा है। अरे भइया, ये चादर तो मैं अपनी धनिया के यहाँ से धुनाकर लाया हूँ।

अगम - देखो धनिया ने ही कहा है कि मेरा चादर तुम्हारे पास है।

दिव्यांस - देखो एक बार मैं ही समझा लो कि यह चादर मेरा है।

अगम - तुम भी अच्छी तरह समझ लो कि यह चादर मेरा है। (चादर खींचता है)

दिव्यांस - नहीं मेरा है। देखो लड़ाई हो जायेगी मैं चला हूँ चादर मेरा है। (आपस में चादर खींचते हैं)
(इतने में चिन्मय व ज्ञानेश का प्रवेश)

चिन्मय - अरे यह क्या महाभारत मचा रखी है।

अगम - देखो भाई साहब यह मेरा चादर नहीं दे रहा है।

दिव्यांस - बड़ा अंधेरा है भाई मेरे घर पर आकर मुझे ही चोर बना रहा है। गुस्सा तो ऐसा आ रहा कि सिर फोड़ कर रख दूँ।

चिन्मय - नुप रहे फालतू की बातें मत करो। अच्छा अगम ये बताओ कि तुम्हारी चादर यहाँ कैसे आई?

अगम - मैंने अपनी चादर धनिया के यहाँ धुलने आली थी। मैं वहाँ चादर लेने गया तो मेरा चादर गलती से इनके यहाँ आ गया।

दिव्यांस - अच्छा तो तुम्हारी चादर की कोई पहचान है।

अगम - हाँ यह देखो चादर पर मेरा नाम लिखा है।
(सभी चादर देखते हैं)

चिन्मय - अरे! इस पर तो अगम का संदी लिखा हुआ है।

दिव्यांस - यह तो सच मैं इसका ली हूँ, तो फिर मेरा चादर कहाँ है?

अगम - तुम्हारा चादर यह रहा। तुम तो मेरी बात सुन ही नहीं रहे थे। मैं तुम्हारा चादर धनिया के चयों से लेकर आया हूँ।

दिव्यांस - मुझसे बड़ी भूल हो गई। मैं आपकी चादर को अपनी मानकर व्यर्थ ही अगड़ा कर रहा था। आप कृपया मुझे क्षमा कर दें।

चिन्मय - ओरे भाइयो! ऐसी ही भूल हम सब अनादि से कर रहे हैं। पर पदार्थों को अपना मान-मानकर।

अगम - क्या बात कर रहे हो मैं तो किसी की चीज को हाथ भी नहीं लगाता।

चिन्मय - भद्रया अगम, यह बात इतनी जल्दी समझ में नहीं आ जायगी। इसे तो गंभीरता से समझना पड़ेगा।

चिन्मय - देखो हमारे साथ यह जो अतिथि आई साहब आये हुए हैं इनका नाम ज्ञानेश कुमार है, यह धुवधाम से आये हैं, उस संबंध में ये ही हमें समझावेगे।

ज्ञानेश - जय विनेश! मैंने आपकी सभी बातें सुनी हैं जिस तरह दिव्यांस आपकी चादर को अपनी मानकर सो रहा था, उसी तरह हम सब भी दूसरी वस्तुओं को अपना मानकर सो रहे हैं।

दिव्यांस - क्या बात कर रहे हो भई साहब, सो तो मैं पहले रहा था, अभी तो मैं जागरूक हूँ।

ज्ञानेश - नहीं भद्रया! अभी तो आपकी सच मित्रा प्रतीत भाव निद्रा जिस मोह नींद कातें हैं वह नहीं रही।

अगम - इस मोह नींद में क्या होता है?

ज्ञानेश - जैसे दिव्यांस सच निद्रा में तुम्हारे चादर को अपनी मानकर सो रहा था। वैसे ही हम सब मोह नींद में शरीर, धन, पदार्थ, पर पदार्थों को अपना मानकर सो रहे हैं।

चिन्मय - यह बात पूरी तरह समझ में नहीं आई, अच्छी तरह समझाओ न।

ज्ञानेश - अच्छा सुनो! आप सब अपना नाम तो अपने ही हैं।

दिव्यांस - हां-हां क्यों नहीं, मेरा नाम दिव्यांस है।

ज्ञानेश - और तुम्हारा?

अगम - मेरा नाम अगम है।

ज्ञानेश - ये तो आपने इस शरीर के नाम बताए हैं, आप अपना नाम बताइए न।

दिव्यांस - ली कर लो बात। क्या मैं और मेरा शरीर अलग-अलग थोड़े ही हैं। हम दोनों एक ही तो हैं।

ज्ञानेश - नहीं भद्रया! यही तो हमारी भूल है जो अनादिकाल से चली आ रही है और इस भूल के कारण ही हमें नरक तिर्यच आदि गतियों के दुख उगाना पड़ रहे हैं।

दिव्यांस - ये बात तो समझ में नहीं आई। ठीक है चक्कर में तो आपने चिन्मय दिखाकर समझा दिया कि वह चादर मेरा नहीं है। पर शरीर तो मैं ही हूँ। इस पर तो मेरा ही अधिकार है।

ज्ञानेश - देखो समझने से समझ में जाता है समझने से नहीं। आप समझने की कोशिश करेंगे तो जरूर समझ में आया। अच्छा यह बताओ कि जीव किसे कहते हैं?

अग्राम - उसे जो जानता-देखता और सुख-दुख का अनुभव करता है वही तो जीव है।

ज्ञानेश - और पुद्गल?

चिन्मय - जिसमें स्पर्श, रस, गंध और बर्ण पाया जाए उसे पुद्गल कहते हैं।

ज्ञानेश - बहुत बढ़िया, आप सबको तो सब याद है।

अच्छा दिव्यांस तुम बताओ; तुम्हारा रंग कैसा है?

दिव्यांस - मेरा रंग गोरा है।

ज्ञानेश - और वजन कितना है?

दिव्यांस - 45 किलो।

ज्ञानेश - अब बताओ कि गोरा, काला रंग, हल्का भारी वजन, सुगंध-दुर्गंध यह सब किसमें पाये जाते हैं?

दिव्यांस - अभी-अभी तो चिन्मय ने बताया था कि स्पर्श-

रस-गंध ये सब पुद्गल में पाए जाते हैं उसे कितना भी याद नहीं रहता क्या?

ज्ञानेश - तो फिर यह कैसे मूल रह ले कि गोरा रंग और 45 किलो का वजन पुद्गल का है, जीव का नहीं।

चिन्मय - अरे हां यार! ये बात तो सच्ची है कि यह सब तो पुद्गल है पुद्गल का है। तो फिर मैं कौन हूँ?

ज्ञानेश - जैसे शरीर की अपनी पहचान है उसी तरह जीव की भी अपनी पहचान है वो है जानता देखता हम सब जानते देखते हैं इसलिए हम जीव हैं शरीर नहीं।

दिव्यांस - क्या बात है ज्ञानेश भाई साहब। आपने तो सच्ची में हमें जगा दिया। हम तो अभी तक शरीर और जीव दोनों के गुणों को अपना ही मान कर सो रहे थे।

ज्ञानेश - शरीर, धन परिवार को तो छोड़ें हमारे भीतर जो राग-द्वेष गुस्सा के भाव होते हैं वो भी जीव नहीं है जीव का स्वभाव नहीं है।

चिन्मय - पर इन सब भावों को तो हम ही कर रहे हैं।

ज्ञानेश - प्रेम का भाव हो या क्रोध का या मान का लोभ का या दया दान का यह सब जैसा संयोग होता है वैसे होते हैं और हमारी अज्ञानता से होते हैं। अतः शरीर पर पदार्थों के कारण होने वाले होने से और दुख के कारण होने से वह भी जीव नहीं है।

चिन्मय - पर भाई साहब पुण्य भाव तो मुनिराज के भी होते हैं।

ज्ञानेश - मुनिराज के पुण्य भाव होता जरूर है पर उसे वह अपना नहीं मानते उन भावों पर भावों पर रहते नहीं हैं। वह उसे अपना दोष मानकर आत्मा में ही लेते हैं।

अग्राम - आज तो आपने भेदज्ञान का बड़ा ही सुन्दर स्वरूप समझाया है। पर यह भेदज्ञान होगा कैसे?

DATE

NOTES

ज्ञानेश - जब हम प्रतिदिन स्वाध्याय करेंगे, चिंतन करेंगे, मन्त्र करेंगे, तत्व का अभ्यास करेंगे तो यह भेदज्ञान अवश्य एवं जल्दी ही होगा।

द्वितीयांश - क्यों अगम भैया कुछ समय में आया अब तो आप चिन्मय के साथ रोजाना स्वाध्याय में जाना।

अगम - मैं तो जाऊंगा ही और तुम भी साथ में चले-चलेंगे।

द्वितीयांश - क्यों नहीं मैं भी जरूर चलूंगा।

ज्ञानेश - ये हुई न कोई बात। आओ हम सब भेदज्ञान प्राप्त करके मोक्षमहल में चले। बीच में पुण्य-पाप के भाव आवें तो उन्हें अपने ज्ञानभाव से नष्ट कर मुक्ति मार्ग में बड़े चलेगें।

धनिया - (दौड़कर आते हुए) अरे भाइयो! हमें यहीं संसार में ही छोड़ दोगे क्या? हमें भी तो साथ में चले-चलो।

ज्ञानेश - अरे भइया! जिनवाणी तो हम सबको मुक्तिमार्ग में चलने का आमन्त्रण देती है।

-चलो हम सब चले (सब मिलकर गाते हैं)।

मुक्तिमार्ग प्राप्त कर बड़े चलो बड़े चलो।

शुको न एक क्षण कभी बड़े चलो बड़े चलो।

ये विकार मार्ग में बदल-बदल कर आयेंगे।

मेघ पुण्य का बना, तुझे सदा रिसायेगी।

शत्रु जानकर इन्हें दले चलो दले चलो...

मुक्तिमार्ग प्राप्त कर बड़े चलो बड़े चलो ॥

महावीर भगवान की जय हो।

49

नारक :- जीव है सो मैं ही हूँ।

DATE

NOTES

मित्र एक लेखिका :- ब्र. गौ. आरती जैन
पात - दस विद्वान

पहला मित्र - चलो भाई! कहीं तीर्थ वंदना को चलते हैं।

दूसरा मित्र - हाँ भाई! विचार तो बहुत अच्छा है, चलो चलते हैं।

तीसरा मित्र - पर मित्र! ये तो बताओ कौन-से तीर्थ चलने का विचार है?

चौथा मित्र - मेरा तो विचार है कि पार्श्वनाथ भगवान के दर्शन करने बनारस नगरी चलते हैं।

ई सभी मित्र एक साथ - हाँ - हाँ बनारस नगरी ही चलते हैं।

पाँचवा मित्र - (हलवे मित्र से) - चेतन! ऐसा करना तुम आज ही नाव वाले से बात कर लेना, रात्रि - ०४ बजे हम सब निकल जायेंगे।

हलवा मित्र - ठीक है मित्र! मैं नाव वाले से बात कर लूँगा।

सातवा मित्र - तो मित्रों आज शाम हम सभी गंगा के घाट पर मिलते हैं - जयजिनेन्द्र।

प्रत्युत्तर - समवेत स्वर में जयजिनेन्द्र।

(सभी शुरु चक्कर लगाकर)

(सभी मित्र नाव में एक के पीछे एक बैठे)

जायेंगे, चार मित्रों के हाथ में हाँड रहेगा,
जिसे वे एक्किंग कर चलायेंगे।)

यात्रा प्रारंभ करते समय - बोलो
पार्श्वनाथ भगवान की जय।

आठवां मित्र - मित्रों! बनारस पहुँचने में बहुत
समय लगेगा ऐसा करते हैं - समय
बिताने के लिए कुछ करते हैं।

नौवां मित्र - ठीक है भाई! अन्ताक्षरी खेलते हैं।

दसवां मित्र - शुरू करो अन्ताक्षरी लेकर प्रभुका नाम
समय बिताने के लिए करना है कुछ काम। - मैं
से बोलो।

पहला मित्र - मीठे रस से भरी जिनवाणी लागे,
जिनवाणी लगे। मने आत्मा की बात
यणी प्यारी लागे।

दूसरा मित्र - गा रे भैया, गा रे भैया, गा रे भैया गा
प्रभु गुण गा तू समय न गवा।।

तीसरा मित्र - बनारस वाले २ पार्श्वनाथ हमारे
बनारस बोलो।

वामादेवी घर जन्म लियो हैं, माता की
कोख की धन्य कियो हैं।

अश्वसेन की आँखों के तारे २

पार्श्वनाथ हमारे, बनारस बोलो...

चौथा मित्र - बाजे कुण्डलपुर में बंधाई ली नगरी
में वीर जन्मे - २ महावीरजी

पाँचवां मित्र - जीयरा हो हो जीयरा - २

जीराज उड़ के आओ सम्मेलन शिवर में,
भाव सहित वंदन करो पार्श्वचरण में।

जीयरा हो हो जीयरा -

छटवां मित्र - रंगमा - रंगमा - रंगमा रे।

प्रभु तारा ही रंग मा रंग गयो रे।।

सातवां मित्र - रोम - रोम से निकले प्रभुवर,
नाम तुम्हारा हा नाम तुम्हारा।।

आठवां मित्र - रोम - रोम पुलकित हो जाये।
जब जिनवर के दर्शन पाये।।

नौवां मित्र - ये धर्म हैं आत्मज्ञानी का,
सीमंधर महावीर स्वामी का,
इस धर्म का भैया नया कहना,
ये धर्म हैं वीरों का गहना...
जय हो -

दसवां मित्र - होली खेली मुनिराज, शिवरवन में,
रे अकेले वन में, मधुवन में...

पहला मित्र - (इशारा करते हुए) - अरे, अरे!
मित्रों! देखो बनारस नगरी आ गई।

बोलो - पार्श्वनाथ भगवान की जय।
(नाव से उतर कर खड़े हो जाते हैं।)

दूसरा मित्र - देखो मित्रों! नगरी में जाने से पहले
एक बार गिनती कर लें, पूरे हैं कि नहीं।

तीसरा मित्र - चलो मैं गिनता हूँ, ... (गिनता है)

रुक्मिणी

रुक्मिणी - दो - तीन - नौ - ।

अरे! अरे! ये क्या हुआ, जब हम गांव से निकले थे तो पूरे दस थे, लेकिन अब नौ ही बचे - - - ।

चौथा मित्र - अरे भाई! तुमने अच्छे से नहीं गिना, मैं गिनता हूँ - - - ।
रुक्मिणी - दो - - - नौ, अरे नौ ही हैं - - - ।

पाँचवा मित्र - अरे, अरे! लगता है तुम दोनों की ही गिनना नहीं आता - मैं अंग्रेजी में गिनता हूँ, वन - टू - - - नाइन, अरे क्या बात है, नाइन ही हैं।

छटा मित्र - अरे लगता है, वास्ते में अपना रुक्मिणी डूब गया। - - - ऊं ऊं ऊं - - -
(सब मित्र रोने लगते हैं।)

(तभी वहाँ से रुक्मिणी पंडितजी)

निकलते हैं।)

पंडितजी - क्यों भाई क्या बात है? तुम सब रो क्यों रहे हो?

सातवां मित्र - क्या बताये! हमारा रुक्मिणी गंगा में डूब गया।

पंडितजी - क्या - - - ? गंगा में डूब गया, कब डूबा?

आठवा मित्र - ये तो हमें नहीं मालूम लेकिन हम अपने गांव से दस मित्र आये थे, अब नौ ही बचे।

पंडितजी - अच्छा - अच्छा मैं समझ गया, चलो कोई बात नहीं मैं गिनता हूँ। देरवी रुक्मिणी - दो - - - दस। देरवी तुम लोग तो पूरे दस हो। तुम दूसरी को तो गिन रहे थे, लेकिन स्वयं को गिनना भूल जा रहे थे, इसलिए दुखी हो रहे थे।

सिद्धान्त - इसी प्रकार यह जीव, जीव को जानने के नाम पर जीव इत्य, जीव तत्त्व, जीव पदार्थ, जीवास्तिकाय आदि सभी को जानता है। जीव के सभी भेद संसारी - मुक्त, त्रस - स्थावर, रुणस्थान, मार्गणस्थान, जीवसमास, सभी कुछ सीखा लेता है, जीव की परिभाषा भी रह लेता है, लेकिन वह ज्ञान-दर्शन को धारण करती हुई वस्तु में स्वयं हैं, जीव हैं सो मैं ही हूँ, ऐसी प्रतीति नहीं करता, ऐसा भाव भासन नहीं करता, इसलिए संसार में परिभ्रमण कर दुःखी होता है यदि स्वयं को जान ले तो, परम सुखी हो जावे।